

कषुमनूस्मत्रकि, ग्राणीवकषुपूननूक्तिनवातिनिन्नदहायविगकिः
कषु, रुविर्धथामनुकूनकूतासं॥ ॥ कषुयाक, पीतिइयावदनसं, दन
न, ग्रासिसं, कषुस्मत्रययात, डायनिमृत्युइलन, कषुयाक, डानिब, मनु
पनपं, दायाद्युत, मग्निसडादर्थ॥ ॥ ॥ **डापयवाच॥** कीटसूयद्विषमृग
षु, अत्रीसृयषु, वकषुपि, मचमनूकषुपियुतग, हानंरुभरुवकुकगव
त्वससादा, त्वयवरुकि, वदनाद्यलिनिनीव॥ ॥ कीटयाकपदियाक, त्वसा
मादियाक, सप्ययाक, ग्राकस, पि, मचमनूयपनिष्क, मल, जि, जनरुत

उत्त० ५४ खरूत ॥ १७ ॥ ॥ श्रीगिनावाच ॥ अहं हि नावायदासदासदासः
स्यदासस्यचदासदासाश्चामीहाजगतीनवासां तस्मादहं धन्यः न
मोमिलोके ॥ ॥ नावायदासः सर्वकया सर्वकः सर्वयानं सर्वकः ऊश्या
मालं मनूयलोकया ॥ ॥ ॥ ॥ तस्मात् ऊधन्यश्यालोकसः ॥ २० ॥ ॥
विदुनावाच ॥ वासुदेवस्य अहं कृष्णः ॥ काकं नृमानसाभिनवादासस्यदा
साहं रुवं ऊन्मनिऊन्मनि ॥ ॥ ग्वयनि कृष्णयारुकिशलेऽमिसः सर्वक
यानं सर्वकः ऊश्या ऊन्मपतिश्यामाल ॥ २१ ॥ ॥ श्रीभावाच ॥ विषयीत

वृकालवृपत्रियागवृवन्धूषाशहिमाहपयाकृष्णः ॥ गतवत्सव
॥ ॥ रुदावन्धूकालविषयीतः कृष्णः वन्धून्त्यागयलनः कृष्णानः ऊन्
कायायमाल ॥ २२ ॥ ॥ डावाच ॥ यथरुताश्च कृष्णवन्धूदद्यात्ते सा कः
नाथनऊनादन्तनाततगतावेनिलयं सुनात् ॥ काधपिदवस्यवलन
उत्थं ॥ ॥ ग्वयनिदवस्यविष्णुनत्तातः ॥ यनिदवयाकृष्णानंदवयाकाध
वलडाउत्थं ॥ २३ ॥ ॥ कृपावाच ॥ मऊनिः रुलमिदं मधूकेटरानं मत्या
थनेकमदनग्रहप्रपप्रवत्वरुत्थरुत्थपत्रिवानकरुत्थरुत्थरुत्थस्य

रुह्यंति मास्मिन्नलाकनाथा ॥ **रुह्यंति** जन्म न **रुह्यंति** जन्म न **रुह्यंति** जन्म न
धनं के स न रुपायाय धनं क किम न क स व क या न स व क स व क या
न स व क स व क लूमानमाल धनं जन्म न **रुह्यंति** ॥ २४ ॥ **मन्त्रवाच** ॥ ग
विन्द के भव जना द न वा स द व वि **रुह्यंति** वि **रुह्यंति** म ध स द न वि **रुह्यंति** प **रुह्यंति** य द
नारु पू न धारु म य द प य नारु य धारु नृ सि द न मान म रु ॥ **रुह्यंति** वि
न्द **रुह्यंति** के भव के न न म स्का न ॥ २५ ॥ **कर्मवाच** ॥ नान्यं व दामि न **रुह्यंति** म
न वि न यामि नान्यं म नामि न रु यामि न वा धु यामि एक त्व दी य च न द

दि ज मा द न ल **रुह्यंति** नि वा स पू न धारु म द दि दा स्य ॥ **रुह्यंति** म धा या स
य म द दा स्य म रु ल पा स्य म रु ल पा स्य म रु ल पा स्य म रु ल पा स्य म रु ल पा
द य रु क रु ल पा के दा स्य ऊ न वि ड ॥ २६ ॥ **धृतिवाच** ॥ न मान म
का न ल वा म धा य नारु य धा यामि नि वि क मा य म न रु व का सि ग ऊ ध ना
य न मा रु न स पू न धारु मा य ॥ **रुह्यंति** काल या का न ल क म न रु व क रु व क रु
दा ध न ल य धा क रु या न न म स्का न ॥ २७ ॥ **गन्धवाच** ॥ त्व म व मा ना
व पि ना त्व म व त्व म व व न्धु सखा त्व म व त्व म व वि शा द वि ली त्व म व त्व

भव सर्वममदवदव॥ ॥ माम् वव वव पाणि विद्या दृष्टि कुरु जन
खदा भवजमदु हदवदव॥ २८॥ ॥ दधनावाव॥ जानामिधर्मनवम
पवृत्ति जानामिपापेनवमनिवृत्ति॥ कनापिदवनहृदिहितनयथानिय
कास्मि तथाकनामि॥ ॥ धर्मसया पापेसयाथथन धर्मसपुवृत्तिमदुपा
पसनिवृत्तिमदु ऊहृदयसवाहृदववन गरथयावकन श्रथयादा॥ ॥
२९॥ ॥ यक्षस्यगुणदाखनयलित॥ पूनधारुम। म्रुहयलु। रुवान्यली म
मदा। धानदीयत॥ ॥ यक्षयागुणदाखनयलित॥ रुहयलित॥ जिशकु

ऊदूरवमद॥ ३०॥ ॥ दुपदावाव॥ यक्ष॥ नन्दरगविन्दमाधवाननकदाव
। विष्णुहृदपीकम वासुदवनमास्तुत॥ ॥ हवासुदवहृविष्णुहृदपीक
म कुरु नमस्तुत॥ ३१॥ ॥ जयदधवाव॥ ॥ नमः कृष्णायसुदायवक्राण
ननमस्तुत॥ यागजवाययागयत्तामहंसवर्णगत॥ ॥ हृष्टयातनमस्तु
न हृष्टयुक्ति कथानल। डा। डा। कुरुश्या॥ ३२॥ ॥ विकर्षवाव॥ कृष्णायवा
सुदवायदवकीनन्दनायव। नन्दरगपकृमावाय। गविन्दायनमानम॥ ॥
कृष्णयातनमस्तुत वासुदवयातनमस्तुत॥ ३३॥ ॥ सामदधीवाव॥

नमः ॥ नमः कल्याण नमः विष्णु वनः ॥ वासुदेवाय नमः ॥ अटी नोप
तथ नमः ॥ ॥ ॥ पत्रमकल्याण कथात यटीयास्वामिकथात नमः कान ॥ ३॥
विनाटावाच ॥ नमो ब्रह्मदेवाय ॥ गमवाक्कलहिताय च ॥ जगदिताय कृष्ण
य ॥ गमविन्दाय नमो नमः ॥ ॥ गमवाक्कलयाहितयाहितयात नमः कान ॥ ३॥
मन्त्रावाच ॥ नमो सीपूष्यसंकास पीतवाससमयूत ॥ य नमः स्यन्ति ॥ गमविन्द
नतर्षाविद्यतरुय ॥ ॥ तिसिबुडद ॥ गमविन्द पीतवसु ॥ गममिश्रन नमः कान
नयात ॥ डामिसरुयमद ॥ ३॥ ॥ वलरुवाच ॥ कृष्ण कृष्ण हृपा लात्व म

गतीनां गतिर्हृदयः। संसारार्थवमग्नीषीदयत्रमंथय ॥ ६६ ॥
हृदयात् गतिमदयनिसंसारममूढसदृढवाद्यनिसं गतिक्वचि
जिह्वा प्रसन्न इत्यमाल ॥ ३० ॥ ॥ श्रीकृष्णवाच ॥ सर्वं ब्रवीमि मनूज ॥ ४४ ॥
यमृद्ववाक् श्रीमां मूकन्दनवर्षिहृजनादनिति जीवज्जपत्य नूदि नमम
नाममां वैकुण्ठवासनियतं सर्वं लपयति ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीकृष्णवाच ॥
नमूकन्दनवर्षिहृजनादनधकृत्तिथं जपयाद्वैदं वादकं वैकुण्ठं ॥ ३२ ॥
धसत्यनधया ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीकृष्णवाच ॥ श्रीमां सवति नित्यं ॥ ४५ ॥

[illegible]

डावनीसिन्धु सत्रचती सर्वतीर्थ श्रमदत्र ॥४१॥ ॥ यमावाच ॥ नवकपञ्च
 मानन्तु यमनेय विरुषित ॥ कित्तया नास्ति तादवक वं भवुः कृष्णनाशन
 ॥ ॥ नवकसथादकयाक यमनदन विष्णुया पूजामयादधिक ॥४२॥ ॥
 श्रीनामदावाच ॥ जन्मात्तव सहस्रं तया आन समादिहि ॥ नवात्त कील
 पापानी कृष्णरुकि ॥ यजायते ॥ ॥ नप आन समाधिन पापमदया ॥
 थादपनीत् कृष्णयाकरुकि रुयीव ॥४३॥ ॥ नाथयानि सहस्रं यष
 यष्वजाम्यहं ॥ तेषु तेषु ॥ यतारुकि नवितार्ता सदा त्वयि ॥ ॥ गुगुति

गुगुतिथानि स ऊवका डगुतिथानि स ऊपूजायाय रुकिऊ इयमाल ॥ ४
४ ॥ ॥ यापीति त्रिविवकानां विषयश्च न पापिनी । त्वामनू ४ त्वमनू ४ सोम
हृदयान्नाय सपर्यु ॥ ॥ विष्णुमिश्रावाच ॥ किं तस्य दाने ४ किं तीर्थे ४ किं
पारि ४ किं मन्त्रे ४ याति त्वं आयात द वं नायाय लोऊ ग मुनी ॥ ॥ का
ल नायाय लया आनमया न तयस्या यरू दान तीर्थे च तया न सां श्वत
पयाजनमदू ॥ ४ ॥ ॥ यमदग्निववाच ॥ निष्ठास्तवारु व रुषां निर्वंधी
नित्यमंगलं । यथा द्वादशैरुगवा नमगलाय तनाहनि ॥ ॥ स नम

हृदयस विष्णुदगडा मिस नित्य डत्ता रु रूयीव संपदि दयीव संयत
रूयीव ॥ ४ ॥ ॥ रावदाजावाच ॥ सारु रुषां गय रुषां कूत रुषां पत्राऊ
य ४ यथा मिन्दी व नग्ना मा हृदय रुषां जना द न ॥ ॥ गमिस हृदय स
जना द न वाना डामिस जय नारु दय वयमदू ॥ ४ ॥ ॥ गमन मावाच ॥
गमकाटि दाने ग्रह लषु काग्ना माघ प्रया गयू ग कल्य वाणी । स भनू न
दुस्य हि तस्य दाने गमविन्द गमविन्द न तुल्य नाम ॥ ॥ काटि सा दानया
दापूथन काणी स तुल्य कि वा स यादा पूथन गमविन्द या नाम ड उल्य

शुभ॥४॥ ॥ नमो नूवाच ॥ (गमविन्दति सदा स्नानं, (गमविन्दति सदा जपः
(गमविन्दति सदा ध्यानं, (गमविन्दति वकीर्तनं ॥ ॥ (गमविन्दधक सदा स्नानं,
(गमविन्दधयोन सदा जपः, (गमविन्दधक सदा ध्यानं, (गमविन्दधक सदा नाम
कृतं जनकाय ॥ ५० ॥ ॥ वसिष्ठावाच ॥ कृष्णतिममर्लनाम, यस्य वा विप्रव
रुते। रुस्मीरुवन्ति तस्यासू मरु पातककाटयः ॥ ॥ रुद्रधकनाम, (गमः
क्रयाववनसदत, डाक्रया, काटिपापं रुद्रमशयी ॥ ५१ ॥ ॥ नमो नूवाच ॥
कृष्णान्मननधेव, पापसंघट्टयधर्म। गतधरुदमाप्रातिगिप्रिवेदह

भायथा ॥ ॥ कृष्णयास्मनयादान, पञ्चमरुपातकन, कनसा, पञ्चमरु
पाप, गतकि काटशयाव, डानीव, पर्वतस, वज्रशकाडा, पर्वतग, (थरुत,
मूर्ध् ॥ ५२ ॥ ॥ रुद्रनूवाच ॥ नमामि तव (गमविन्द, नामतत्त्वगताधिकीद
दात्यवावधन्मूकि, रुवान्मरुदयागतः ॥ ॥ नमो नूवाच ॥ डावान्मया
दान, कृत्यालनमूकिविल, धरु, (गमविन्दनमत्काव ॥ ५३ ॥ ॥ नमो नूवाच
(गमवाच ॥ नमामि नावायलपादपंकज, स्मनामि नावायलतत्त्वमश्रयी। क
नामि नावायलपूजनं सदा, वदामि नावायलनामनिर्मलं ॥ ॥ नावायलमा

पाठ हा दान पसंखान नमस्कार नावाय लया नूयय तत्व समन लया दा ना
नाय ल पूजाया दा नावाय लया ना म बु धया सदा ॥ १॥ ॥ **मो न का वाव** ॥
स्मृतं सकल कृत्या ल राजनं य ज जायते । पू नू र्वं त म ज नि र्ख्य व जा मि ध न
लं ह रि ॥ ॥ **गव क्र** ॥ ह नि या सम न ल या तं डी क्र या सम स क कृत्या ल श ल डी क्र
ह नि या क सम न ल डी ने ॥ १॥ ॥ **ग ल न वाव** ॥ ना वा य र ति म क सि वा ग सि
व स व र्दि नी । त था पि न न क मू दा प त नी ल्य दु र्ग म ह त ॥ ॥ ना वा य ल ध क
म ल्क थ व व स रू डा व व न द व थ ध न मू र्व य नि न त्रे के म ति न थ श्री म

हा श्री म्थ ॥ १॥ ॥ **दा ल या वाव** ॥ कि न स्या वा नो र्म ले लु रु कि र्थ स्य ज ना द
न । न मा ना वा य ल य ति म ल्क ४ स व र्थे सा ध क ॥ ॥ **गव क्र या वि प्र या क रु कि**
द त डी क्र या म ल्क न द न न ती र्थ न म र्व न मा ना वा य ल य ध क म ल्क थ स
व र्थे सा ध क ॥ १॥ ॥ **वे ॥ पा य ना वाव** ॥ य ज था ग र्व न ४ क र्था य ज था
थ धि न ३३ य १ ग र्व धी वि ज था रू ति र्दु वा नी ति म ति र्म म ॥ ॥ **ग ल क र्व द**
न मू न मू र्क न द व मू न स प ति वि ज ये त्रे र्व र्थ द व ॥ १॥ ॥ **अ गि ना वाव**
॥ स क दू वा वि र्थ न ह नि नि र्ख्य न द य । व र्द ४ प नि क न र्थे व मा का य

गमनस्यति॥ ॥ हविर्विहति श्रुतं न न गम उक्तं पातधायान् भादयान् तदुक्तं
॥ ५२ ॥ ॥ यथा भावावाच ॥ हविर्विहति यावानि दूष्टविहति न पि स्मृतं तं श्रुतिः
क्यापि सस्य क्षा ददृष्टवहि पावकः ॥ ॥ दूष्टविहति यमिनं स्मृतं लया
दानं विष्णुन पापहृतकल विष्णुधिसनं मरुतलययेनि श्रुतिन दादया
न गत्य श्रुतं श्रुतं ॥ ५० ॥ ॥ यथा भावावाच ॥ हविर्विहति न ससा न ह सर्वदामधुन
प्रिय ॥ गमविन्दनाम पीयूषं पिवजिह्वनि न तनं ॥ ॥ हविर्विहति न ससा न सि
वक्रकं ॥ गमविन्दनाम श्रुतं न ह म ध श्रुतं निवक्तव्या दतादा ॥ ॥ ॥

या भावावाच ॥ सत्यं सत्यं पन ४ सत्यं सत्यं वाग्निदं वाग्निवीतं नास्ति व दात्य न आह न
दव १ कं वात्य न ॥ ॥ विद्वद्वाग्निदं सत्यं खडा वद देयवान् श्रुतं स द विष्णु
उपनाक्तं दव म द ध सत्यं खडा ॥ ५२ ॥ ॥ मा कं गुया वाच ॥ स्वर्गं देवा क द द व
सुखं द जगता गुनं कथं मूकं रुमपि त वासु द व न विनय न ॥ ॥ स्वर्गं विडा क
मा क विडा क सुखं विडा क वासु द व ग र्थ मूकं रुख न चिन्तेना मया का ध क धात
॥ ५३ ॥ ॥ अगस्त्य वाच ॥ निमिषं निमिषा च वा प्राप्तिना विष्णुचिन्तनं नृप नृक
नृकं प्रयागं नैमिषं वनं ॥ गम गम ख विखनं विद्यामि यनि स विष्णुचिन्त
ना शला ज्ञान ज्ञान क नृकं प्रिया ग नैमिषा व न ॥ ५४ ॥ ॥ वासु द वा वाच ॥

निमिषं निमिषा इमा यस्मिन् निजनादनि। ककुकाठिसूक्तया। नलरुनरुल
रुलत॥ ॥ ग्यमिषम खचिरुन विप्रविन नायात डामि सन काठिकाठियह
यादायो रुल लान॥ ॥ ॥ शुकावाच॥ श्रालाक सव वी। श्रालि विचार्य च पुन
पुन॥ नूदमं के रुल पृथ॥ श्रया नाना यल सदा॥ ॥ नून ग। सुवसी विचा
नया तसा विप्रयो न। नया यथ गुनि पृथ। अय सरुल अय॥ ॥ ॥
नूदं य विप्रमाये र्थ पृथ पाप पला सन। दृष्ट प्रनाम न स्म। मुग् पापु वे प
त्रिकी र्तिन॥ ॥ पवि प्रगुनि श्राय दृष्टि गुनि गुल्य गुनि पाप ना स रुडा गुनि
दृष्ट प्रनाम रुडा गुनि पापु व। पति सन कीरु नया के॥ ॥ ॥

दया दवा। अथ यथ त पापना॥ कीरु य निरु ॥ ॥ ॥ सन नाना य। ॥
॥ ॥ शुकादि दव पति सन अवि पति सन नाना यल या नाम काल॥ ॥ ॥
याप॥ ॥ ॥ तन काय वे प्र व स्मा ग मूल स। सर्व पाप विनिर्मूका विप्र ला के स
ग रुति॥ ॥ ग्य फे न प्रातः काल स ददा व थ स्मा ग पाप पूर विप्र ला के स
डान॥ ॥ ॥ वास द व म नाय स जप दामा च नादिष। कथा पना। ग्ने न वाय
दवा यथा धि क रुत॥ ॥ जप स हाम स पूजा स वास द व ध क मन तल डी फन
अधिक रुत लात॥ ॥ ॥ गीता ग म न ग म य जी। गी विन्दा ग न रु थ ज श। गी
व रु ग्ने को न य क स्य पुन ज न्मान विद्यत॥ ॥ गीता ध क ग म ग म य जी। गी वि

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ गीताय ॥ १ ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥
 विष्णुनाम्न सगच्छते ॥ ॥ गीताय ॥ १ ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥
 डाक्यात्तमस्य शर्पणात्तमाव विष्णुनाम्न सगच्छते ॥ १ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥

॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥

॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥
 सिद्धिर्धर्मो हृदोणी ॥ १ ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥

बलसुवन्न प्रिप्रदक्षिणायाय ॥ ॥ अध्यात्ममन्त्राय ॥ ॥
 लाके मन्त्रे नमः शिवाय धर्म पूजायाय ॥ ॥ धार्थनायाय ॥
 नमो अकस्व नृपाय महापल यथा निराला महादत्ताय विद्याय नारायणाय
 नमः ॥ ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 कल्यवृक्ष नमस्तु ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 ॥ ॥ गन्धर्वगणाय ॥ गन्धर्वगणाय ॥ धर्मलिप्यन्धकारमवलरुद्ध
 सूरदा देशनेयाय ॥ दूरावेदावप्रदक्षिणायाय ॥ वलरुद्धधर्ममन्त्राय

दी३

॥ ॥ आय ॥ धार्थनायाय मन्त्र ॥ नमस्तु हलधृग्राम नमस्तु मंगलाय धान
 मस्तु नवतीकान् नमस्तु रुक्वत्तल ॥ नमस्तु वलिनी ॥ नमस्तु धनली
 धन ॥ पलम्बा नमस्तु सुगहिमा कृष्णपूर्वज ॥ ॥ धर्मधर्मनदावधर्म
 धर्म धी कृष्णपूर्वज ॥ ॥ दामा कर्ममन्त्राय ॥ गन्धर्वगणाय ॥
 धर्ममन्त्र धार्थनायाय ॥ जय कृष्ण जगन्नाथ जय सच्चिदेनाम जय वा
 नृकणि प्रजय कर्मनिस्तदन ॥ जय यम विष्णु लाके जय ब्रह्मा जय
 जय नीलाब्दस्याम जय वासुदेव लघुदा ॥ जय द

२
सा न सा स न । ऊ य ला क य न ना थ ऊ य वा ॥ रु ल य द ॥ स सा न सा ।
धो न नि ४ सा न ल य न व ॥ ल । को ध य ला क ल नो ड वि ध या द क स य व ॥
ना ना नो ॥ ग म मि के लि ल भा ला व रु सि द स न । नि म र ग र ह स न र ध र या हि
मी य न धा रु म ॥ ॥ ध म रु धा ल पा व द र्शन या य हा ऊ ऊ या व द धु व न
य ल म या य ॥ ॥ ध र ध न ठा लि म रु द र्शन या य ॥ ग न य या दि ॥ ॥
ध म रु न धा र्थ ना या य ॥ ॥ न म रु स व द र्शन या य ॥ ग र्हा मि
प न य ज क का ला य नी न मा रु न ॥ ॥ ध र ध न ठा व हा ऊ ऊ ल पा व द धु

य ल म या य ॥ ॥ ध र्नी लि न व सि द म रु य व न द र्शन या य य ॥ ध प वा न
पू ज ॥ न म रु का व द धु य ल म य द र्शन या य स म रु ध न क ॥ ॥ य न ४ रु
ग रु स न ना न या य ॥ ॥ ध र मा ध व द र्शन या य ॥ ॥ का ना दि द र्शन रु न पू
जा ॥ ॥ ध र मा ध व स रु य धा ल पा व न म रु का व या दा व ॥ म रु मा ध व द
र्शन या न व न ॥ स व द र्शन य रु वि र्शन य रु प र्ति मा दि न य रु स रु स
म रु स रु ना न या न व न वि धि ॥ ना ना य ध म रु ना या दा व धा न या दा व पू ज
या दा व ध म रु ना ना न या य ॥ ल म मि हि लि पा ना ध न ना ध का प दी

नायधनः सर्वरुतानां जीवानां यशुः प्रथमः ॥ अमृतस्यावलिर्हृदि ॥
वशानि नयी पतः। वृजिनं रुतमसर्वतोऽपि नानामाहृतं ॥ ॥ **दवतय**
पिठतयलयाय ॥ आवनयादावमोनयादावसमूद्रयादसकृद्विधन
कपिकुलदयकं वायपिद्वालदयकं ॥ ध्यादधसमूद्रपणपदवा
यमूर्तिदयकं मलुलनकायकं ॥ **ध्या** कनमूलमर्तुलनावायवः
पूजा दादधकनपूजा ॥ ॥ **ध्या** न॥ वरुजुजमहासत्त्वसूर्यकारिस
मषरुं। विन्दयित्वा महायागं कानि नृपे सनातन ॥ ॥ **आवाहनमस्तु** ॥

मस्तु नृपावनादधनावसिंहाथवामनः। कृत्यादिदववत्रदा समना
वायवः ॥ **ग** तः ॥ ॥ **आसनमस्तु** ॥ समनूपादपीठं पद्मकल्पितमान
सं। सर्वसत्त्वहितायैतिष्ठस्वमधुसूदन ॥ ॥ **अथपाठः** ॥ **ॐ** नमो भगवते
विनायक्यै नमः। नमो भगवते वासुदेवाय नमः। नीलवर्णमहास्यमनमस्तु नृपाव
स ॥ ॥ **पाठः** ॥ पाठ्यन्तथा धवपद्मनाकसनातन ॥ विष्णुकमलपत्रा
दगुहालमधुसूदन ॥ ॥ **मधुपकमेत** ॥ मधुपकमेतदादववृक्षाद्यः
कल्पितवशः। निवदितमयारुहः ॥ **नृपावना** ॥ ॥ **आचमनम**

मन्दाकिन्यां न वास सर्वपापहर्त्रे ॥ १ ॥ गृहस्थाय मनीयस्व मया रुक्म
निवदितं ॥ ॥ **स्नानमनु** ॥ त्वमाय ४ पृथिवी ये व आतिस्व वायु न व व ॥ ला
कत्वं वै हि मा शुचं वा विष्णु स्नापयाम्यहं ॥ ॥ **वसुमनु** ॥ ॐ देवत्वं वास सा
युक्ता यद्य व ॥ समन्वितः ॥ स्वर्गं व ॥ प्रेक्षा देव वाससीत व कथा व ॥ ॥
विलपनमनु ॥ ॐ ह्रीं श्रीं न न जानामासि य ईं व व कथा व ॥ मया नि
वदितं गन्धर्वा प्रतिगृह्ण विलपनं ॥ ॥ **उपवीतमनु** ॥ अग्न्यहं सामकुल
निर्मितं यद्यभातिना ॥ सावित्री ग्रन्थि संयुक्ता उपवीतं तथायुतं ॥ ॥ **मूलका**

लमनु ॥ दिशु न त्रसमायुक्ता वक्रिरानु समप्ररुं ॥ गगनालि त वरं ॥ रुक्म
मूलका गगलिमाधव ॥ ॥ **धूपमनु** ॥ वनस्पति न सादिशा गन्ध ॥ सूत्र लि
तं य व ॥ मया निवदितं रुक्मा धूपार्थं प्रतिगृह्णतां ॥ ॥ **दीपमनु** ॥ सूर्य व
द्यमसाक्षाति विद्युदग्ना स्तुते व व ॥ त्वमव आतिषा देव दीपार्थं प्रतिगृ
ह्णतां ॥ ॥ **नेवयमनु** ॥ अन्नं च रुचिभिः ॥ ये व दीपार्थं प्रतिगृह्णतां ॥ ॥
न मे व हि ॥ समन्वितं ॥ मया निवदितं रुक्मा ने व ईत व कथा व ॥ ॥
ॐ नमानात्राय नमः ॥ ॥ ॥ **धूपमनु** ॥ द व या क्ता य ॥ ॥

ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ सामगदवाच ॥ प्रज्ञादनावदयनाश्रयपुत्रीक
शाशास्त्रनीषशुकः श्री नकेरीषकाशाश्रयकाश्रयदार्शनवशिष्टविशीष
लाद्या ॥ जगन्नाथपत्रमरागवतान्नमासि ॥ १॥ ॥ प्रज्ञादनावदयनाश्रय
पुत्रीकशास्रमन्त्रनीषशुकः श्री नकेरीषकाश्रयकाश्रयदार्शनवशिष्ट
विशीषलाधर्मश्रुतिविष्णुकिशकाश्रयिपतिजननमस्कावधकसाम
हर्षलनधाला ॥ १॥ ॥ धर्मावाच ॥ धर्माविवर्द्धितयुधिष्ठिरकीर्तन
पार्थपलाध्वशुककादवकीर्तननाश्रयविनश्यतुधनेजयकीर्तन

माद्यीसुगोकथयती नरुवन्तिनागश ॥ धर्मवृद्धिश्रयमालयुधिष्ठिर
याकीर्तनायादानरीमसेनया नामकायानपापरूयश्रुनया ना
मकायानश्रुयनकूलया सहदेवया नामकायानयागमदय
मालधकधर्मलेखन ॥ २॥ ॥ वक्तावाच ॥ यमानवाविगतनागपना
यवहा नायायलस्रयुवसततस्मन्निधाननतनरुतकिलिषव
तनास्मादुपयाधवनसेनयनपिवन्ति ॥ ॥ गमकमनूययनित्य
ननागदखमदयकादवया ॥ श्रुतनायायलस्रवलायातडागुलि

न पाप रूत काडा डामिस पून ऊँ वनि सामया दू नानममाल ॥ ३ ॥
ॐ उवाच ॥ नावाय लामनामनवाननापी पतिव्रत ॥ यो न ॥ कथित ॥ पृथिव्या ॥
श्रेष्ठ कर्जनाजित पाप संवर्य हनय ॥ अर्धमेतिमात्रक वल ॥ ॥ नावाय ॥
लक्ष्म्याक्त मनश्च पति स पतिव्रत ॥ गन्धन ॥ अतसा ॥ नून कमन संयाद
नया पाप स्मर लमात्र न खला ॥ ४ ॥ ॥ यथिदिन उवाच ॥ मयस्या मयी
त कोषय वरु श्रीवत्सा दंकोरु श्रीरुसिता मयी ॥ अस्मान् पुरुषीकायता
क विष्णु वन्द सर्वलाके कनाथ ॥ ॥ मय ॥ धरा कपीत वरु श्रीवत्सकोरु

रुचिद्र पूष्णामा पद्म ॥ धरा दमिरा सकल आकन कायाक रुक्म शक
न संसात्रयो नाथ विष्णु जननमत्कात्रधक यथिदिन कलुतिजात ॥ ५ ॥ ॥
श्रीममन उवाच ॥ जलोद्यममस्तव नाव नाधना विषानकाया खिलवि
श्वमूर्तिना ॥ समुद्र नाथ नव नाद वृषि ॥ समस्त यत्तु गवायसी दत्त ॥
॥ ॥ वनावन सहित नलख सदख गुलिसल ॥ क्विकपेनिस मत ॥ अथर्था
वनाद वृषन ॥ धलवान क्लृप्त नल ॥ गवर्क न ॥ डाम विष्णु प्रमन्न शयमाल
जित धक श्रीममन धाल ॥ ६ ॥ ॥ श्रीरुसिता उवाच ॥ नूविन्म क म न क म

श्रुतं विष्णुसंस्तु कत्रलविरु तलावीलेला क्व विस्मान विरावरुविना रु
विष्णुपन्नास्मि गतिं महात्मना ॥ ॥ मननरा लयमजीवक मृदुकक मन
नक रुयमदक विष्णुक सकलसंन कक क कावला रत क उला कविः
स्मानरा विष्णु सकलसं गतिक ऊन प्रपश्या ॥ ॥ नकुल उवाच ॥ यदि
गमनमधस्तात्कर्मया न वद्धा द्यतिवकुलविही न ऊनमपदि कीटा
कुमि तमपि गत्वा त इतास्व न यात्मा रुवहुममददिल्ल कं वरुकि नका
॥ ॥ अथ न नीव जन्म थ शल कतमदपनिक थ शल संगलया क की

टया कं वत कि कुमिया क जन्म शया डी कि विष्णुया क मन भश ल विष्णु
या क रुकि थ शल ॥ ॥ ॥ सहदवा वाच ॥ तस्य ये हव ग्राह्य विष्णु न उ
लत ज स प्रलम थ ति कू व कि तस्या पीहन मानम ॥ ॥ विष्णु न मत्कान
ग्य क स न या त आयनिका ऊन न मत्कान व क सहदवन धी ल ॥ ॥
को क वाच ॥ स कर्म रु ल निदिष्टा या या थानि वृजाम्यह ॥ तस्या तस्या
द्विषि कं लयिरुकि इरा रुम ॥ ॥ थ व कर्म ल कं हा गुलि आनि स जन्म
शल सी कि कं रुकि शयमाल रु कं व ॥ ॥ ॥ साधु वाच ॥ क प्र न ता